तीर्थ की ओर...
अंतरात्मा की ओर...

महातीर्थ यात्रा

पार्ट 1

डिजिटल डायरेक्टरी एवं स्मारिका

श्री सम्मेद शिखर जी की महिमा | पंचतीर्थ | विशेष जानकारी

*तीर्थ
केवल स्थान नहीं,
आत्मा की दिशा हैं...*

॥ जिनधर्म का पथ | सम्यक यात्रा का संग ॥

चलते
कदम
बढ़ता
धर्म

प्रसंग

28 वाँ

अनेक कल्याणक भूमि वर्षायोग

2026

|| धर्म | ज्ञान | संयम | सेवा ||

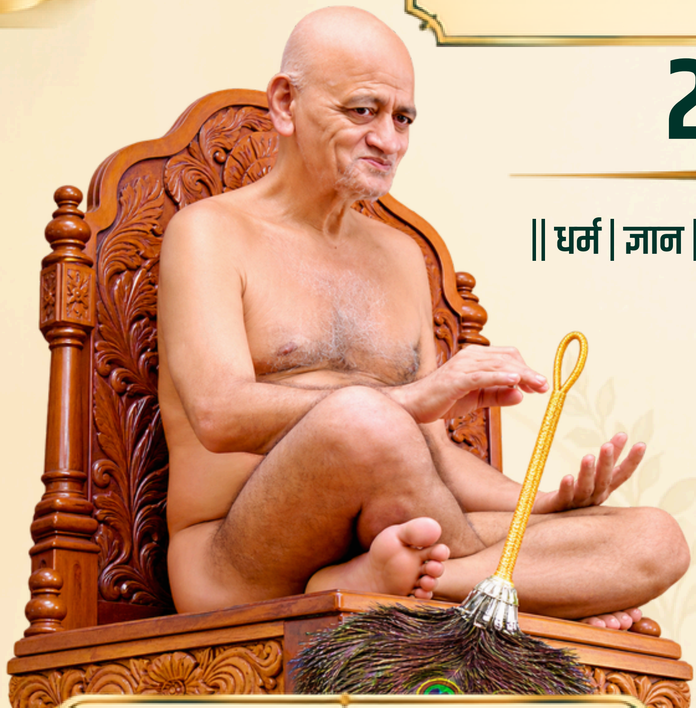

आशीष छांव : - महासमाधिधारक परम पूज्य
आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

आशीर्वाद परम पूज्य आचार्य श्री 108
समय सागर जी महाराज

प. पू. मुनि श्री 108
धर्म सागर जी महाराज

पुण्यवर्धन सानिध्य

प. पू. मुनि श्री 108
भाव सागर जी महाराज

चातुर्मास स्थल - श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगबर जैन तीर्थ क्षेत्र भेलूपर (काशी) वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

सहयोग

श्री दिगबर जैन समाज (काशी) वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

पवित्र यात्रा
उज्जवल संस्कार
शातिमय संसार

28 फरबरी 2026 तक विराजमान

सम्यंक दर्शन
सम्यंक ज्ञान
सम्यंक चारित्र
मोक्षमार्ग
का आधार

शाश्वत सिद्धक्षेत्र
श्री सम्मेद शिखरजी

गुणाय़तन, मधुवन, जिला गिरिडीह (झारखंड)

अहिंसा
संयम
साधना
समर्पण
से ही
सिद्धि का
मार्ग प्रशस्त
होता है

आशीष छाँव :- महासमाधिधारक परम पूज्य आचार्यश्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज

आशीर्वाद प्रदाता :- परम पूज्य आचार्यश्री 108 समयसागर जी महामुनिराज

पुण्यवर्धन सानिध्य :- परम पूज्य मुनिश्री 108 धर्मसागर जी महाराज एवं
परम पूज्य मुनिश्री 108 भावसागर जी महाराज

आर्यिकाएँ

1	आर्यिका श्री ऋजुमति माताजी	21	आर्यिका श्री शीतलमति जी	41	आर्यिका श्री अमदमति जी
2	आर्यिका श्री अनंतमति माताजी	22	आर्यिका श्री सुसिद्धमति जी	42	आर्यिका श्री अभेदमति जी
3	आर्यिका श्री विमलमति जी	23	आर्यिका श्री साकारमति जी	43	आर्यिका श्री संवेगमति जी
4	आर्यिका श्री कुशलमति जी	24	आर्यिका श्री सुशांतमति जी	44	आर्यिका श्री निर्वेगमति जी
5	आर्यिका श्री निर्मलमति जी	25	आर्यिका श्री अकंपमति जी	45	आर्यिका श्री सूत्रमति जी
6	आर्यिका श्री शुक्लमति जी	26	आर्यिका श्री अचलमति जी	46	आर्यिका श्री सविनयमति जी
7	आर्यिका श्री दुर्लभमति जी	27	आर्यिका श्री उद्योतमति जी	47	आर्यिका श्री समयमति जी
8	आर्यिका श्री अंतरमति जी	28	आर्यिका श्री स्वास्थ्यमति जी	48	आर्यिका श्री शोधमति जी
9	आर्यिका श्री अनुग्रहमति जी	29	आर्यिका श्री कर्तव्यमति जी	49	आर्यिका श्री शाश्वतमति जी
10	आर्यिका श्री अक्षयमति जी	30	आर्यिका श्री गंतव्यमति जी	50	आर्यिका श्री सरलमति जी
11	आर्यिका श्री अमूर्तमति जी	31	आर्यिका श्री तथामति जी	51	आर्यिका श्री शीलमति जी
12	आर्यिका श्री अखंडमति जी	32	आर्यिका श्री उदारमति जी	52	आर्यिका श्री सुशीलमति जी
13	आर्यिका श्री अनुपममति जी	33	आर्यिका श्री संतुष्टमति जी	53	आर्यिका श्री मार्दवमति जी
14	आर्यिका श्री अपूर्वमति जी	34	आर्यिका श्री निकटमति जी	54	आर्यिका श्री मंगलमति जी
15	आर्यिका श्री अनुतरमति जी	35	आर्यिका श्री पृथ्वीमति जी	55	आर्यिका श्री परमार्थमति जी
16	आर्यिका श्री अनर्घमति जी	36	आर्यिका श्री निर्मदमति जी	56	आर्यिका श्री ध्यानमति जी
17	आर्यिका श्री अनुभवमति जी	37	आर्यिका श्री मेरुमति जी	57	आर्यिका श्री अवायमति जी
18	आर्यिका श्री स्वाध्यायमति जी	38	आर्यिका श्री असीममति जी	58	समाधिस्थ आर्यिका श्री श्रुतमति जी
19	आर्यिका श्री विनतमति जी	39	आर्यिका श्री अगाधमति जी	59	आर्यिका श्री अमितमति जी
20	आर्यिका श्री अधिगममति जी	40	आर्यिका श्री निर्वाणमति जी	60	आर्यिका श्री चारित्रमति जी
				61	आर्यिका श्री श्रद्धामति जी

**महासमाधिधारक प.पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित
आर्यिकाएँ श्री सम्मेद शिखरजी मे सबसे अधिक संख्या में
विराजमान रही**

श्रद्धा
ज्ञान
वंदना
मुक्ति का पथ

श्री सम्मेद शिखर जी की वंदना करने का फल दुनिया में सबसे अधिक प्राप्त होता है।

अनेक सिद्धों की वंदित यह पावन धरा, आत्मा को देती है मोक्ष का सहारा।

1 शाश्वत सिद्धभूमि

दिगंबर जैन धर्म में श्री सम्मेद शिखर जी को शाश्वत भूमि मानी गयी है। प्रत्येक काल में यहाँ से तीर्थकरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है –

- पहले भी हुई है
- वर्तमान में भी हुई है
- आगे भी होगी।

शाश्ववत का अर्थ है –

अजर ◆ अमर ◆ अविनश्वर

अर्थात् जिसका कभी विनाश न हो।

2 हुण्डावसर्पिणी काल का विशेष उल्लेख

इस हुण्डावसर्पिणी काल दोषें के कारण कुछ तीर्थकरों का जन्म अन्म स्थानों से हुआ है और मोक्ष भी अन्य स्थानों से हुआ है, वैसे प्रत्येक काल में सभी तीर्थकरों का जन्म अयोध्या में होता है और निर्वाण श्री सम्मेद शिखर जी से होता है।

इस काल में निम्म तीर्थकरों का मोक्ष अन्य स्थानों सें हुआ –

- श्री आदिनाथ भगवान – कैलाश पर्वत से
- श्री वासुपुज्य भगवान – चम्पापुर के मंदारगिरि से
- श्री नेमिनाथ भगवान – गिरनार पर्वत से
- श्री महावीर भगवान – पावापुरी से

सामान्य कालचक्र में –

जन्मभूमि	निर्वाणभूमि
अयोध्या	श्री सम्मेद शिखर जी

3 कल्याणक भूमियों की वंदना

- जो जिन जहाँ जहाँ से परम निर्वाण (मोक्ष) को प्राप्त हुए है, मैं उनकी वंदना करता हूँ तथा मन, वचन, काय से शुद्ध होकर उन्हें नमस्कार करता हूँ।
- वैभव संपन्न सभी निर्वाण भूमियों मेरा कल्याण करें।
- उर्ध्व लोक, अधोलोक, मध्यलोक की सिद्धभूमि को नमस्कार हो।

“ समस्त निर्वाणभूमियों को विनम्र वंदन वे मेरी आत्मा का कल्याण करें। ”

4 तीर्थ क्षेत्र की महिमा

- तीर्थ क्षेत्र महापवित्र होते हैं, यह अनादि तीर्थ होते हैं।
- अनंतानंत तीर्थकरों ने इन्हें पवित्र बनाया है।
- इनकी महिमा अपरंपार है।
- इनकी वंदना करने से 50 भव भी धारण नहीं करने पड़ते हैं।
- 49 भव में मुक्ति प्राप्त कर लेता है इस महातीर्थ की वंदना करने वाला जीव।

आध्यात्मिक संकेत

जो श्रद्धा, नम्रता और शुद्ध भाव से इस सिद्धभूमि की वंदना करते हैं, उनके लिए यह तीर्थ मात्र पर्वत नहीं, बल्कि मोक्ष का साक्षात् द्वार है।

अहिंसा
संयम
साधना
समर्पण

1 से 3 फरबरी 2026

श्री सम्मेद शिखर जी की परिक्रमा

मुनि श्री धर्म सागर जी ,मुनि श्री भाव सागर जी महाराज, आर्यिका श्री ऋजु मति माताजी, आर्यिका श्री अनंत मति माताजी, आर्यिका श्री आदर्श मति माताजी की संघस्थ आर्यिका सहित 61आर्यिका माताजी के सान्निध्य में हुई

“ प्रभु की स्मृति हम सबके जीवन में दिशा, साधना और सम्यक जीवन की प्रेरणा है ।

“ तीर्थ की वंदना से जीवन का कल्याण होता है,
और साधु-संघ का सानिध्य अमूल्य है । ”

तीर्थ यात्रा के पथ पर...

तीर्थ वंदना | आत्मकल्याण | अहिंसा | सम्यक जीवन

पर्वत पर चढ़ते समय नाक से श्वास लेने से थकान कम होती है

श्री सम्मेद शिखर जी की वंदना का फल

दुनिया में सर्वाधिक प्राप्त होता है

[redacted]

सिद्धों की भूमि
मुक्ति का द्वार
श्री सम्मेद शिखर जी
अपरम्पार ।।

जहाँ-जहाँ चरण पड़े मुनियों के,
वह पर्वत हुआ पावन ।
श्री सम्मेद शिखर नाम है जिसका,
वह सिद्धि का आँगन ।।

1. इस महातीर्थ से **20 तीर्थकर** के साथ **86 अरब 488 कोडकोड़ी 150 कोड़ी 1027, करोड़ 38 लाख 70 हजार 323 मुनिराजों** ने **मोक्ष** प्राप्त किया।

2. इस महातीर्थ की वंदना करने से **33 कोटिं 235 करोड़ 74 लाख उपवास** का फल मिलता है।

3. इसकी वंदना करने से **एक अरब 98 करोड़ 71 लाख उपवासों** का फल प्राप्त होता है।

4. जो चतुर्विध संघ सहित पदयात्रा करते हैं वह **दो-चार भव** में ही संसार से पार हो जाते हैं।

5. **मघवा चक्रवर्ती** ने **32 लाख मनुष्यों** के साथ वंदना की थी।

6. इस पर्वत पर ऐसा कोई बाल बराबर क्षेत्र नहीं है की जहाँ से कोई ना कोई मुनि ने मोक्ष प्राप्त नहीं किया हो बाल बाल पर सिद्ध हुए हैं समस्त पर्वत ही सिद्ध भूमि है इसे **सिद्धाचल** भी कहते हैं

7. **राजा ललित दत्त** ने **1 करोड़ मुनिसंघ 42 लाख मनुष्यों** के साथ वंदना की थी।

8. **सुप्रभ राजा** ने, विभिन्न प्रकार के नृत्यगान सहित उत्सब से, **एक करोड़ मनुष्यों** के साथ वंदना की थी।

9. **चांदसेन राजा** ने **18 अक्षौहिणी प्रमाण** मनुष्यों के साथ वंदना की थी।

10. **राजा हेमदत्त** करोड़ भव्यों को लेकर यात्रा के लिए आये थे।

11. **आनंद सेन राजा** ने **32 लाख भव्यों** के साथ हर्षपूर्वक वंदना की और महादान दिया था।

12. **राजा मेघरथ** ने **32 लाख मनुष्यों** के साथ वंदना की थी।

13. **राजा भवदत्त** ने चतुर्विध संघ सहित **33 करोड़ भव्यों** के साथ वंदना की थी।

14. **श्रीसुपार्श्वनाथ कूट** की वंदना का फल 20 कूट की वदंना के बराबर बताया है

15. श्रीसुपार्श्वनाथ कूट की वंदना पूजन, परिक्रमा से **उद्योदक राजा** का कुष्ठ रोग ठीक हो गया था इसलिए वहां की मिट्टी पवित्र है

*'एक-एक कण है पावन यहाँ,
हर शिला में सिद्धों का धाम ।
श्री सम्मेद शिखर की वंदना से,
मिटता भवसागर का नाम ।।*

“तीर्थ की वंदना से जीवन का कल्याण होता है, और साधु-संघ का सानिध्य अमूल्य है। ”

तीर्थ वंदना ✦ आत्मकल्याण ✦ अहिंसा ✦ सम्यक जीवन

|| सम्यक दर्शन सम्यक ज्ञान सम्यक चारित्र मोक्षमार्ग का आधार ||

अहिंसा
संयम
साधना
समर्पण

18 फरवरी 2026

द्वितीय समाधि स्मृति महोत्सव

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की पावन स्मृति में

विद्या समय यात्रा संघ, मुंबई की ओर से
1040 लोगों ने निःशुल्क यात्रा का लाभ प्राप्त किया

"आचार्यवर की स्मृति हम सबके जीवन में दिशा, साधना और सम्यक जीवन की प्रेरणा है।"

"तीर्थ की वंदना से जीवन का कल्याण होता है,
और साधु-संघ का सानिध्य अमूल्य है।"

तीर्थ यात्रा के पथ पर...

तीर्थ वंदना | आत्मकल्याण | अहिंसा | सम्यक जीवन

तीर्थ वंदना
मोक्ष का मार्ग

महातीर्थ यात्रा

श्री सम्मेद शिखर जी की महिमा

"आओ चलें...
मोक्षभूमि की ओर..."

चौबीस तीर्थकरों एवं गौतम गणधर के कूटों की वंदना का फल

1. **श्री आदिनाथ भगवान** की कैलाश पर्वत कूट टोंक न. 10 की वंदना करने से अनेक उपवास का फल मिलता है।
2. **श्री अजितनाथ भगवान** की सिद्धवर कूट टोंक न. 22 की वंदना करने से 32 करोड़ उपवास का फल मिलता है।
3. **श्री शभंवनाथ भगवान** धवल कूट टोंक न. 14 की वंदना करने से 42 लाख उपवास का फल मिलता है
4. **श्री अभिनंदननाथ भगवान** की आनंद कूट टोंक न. 15 की वंदना करने से 16 लाख उपवास का फल मिलता है।
5. **श्री सुमतिनाथ भगवान** की अविचल कूट टोंक न. 17 की वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल मिलता है।
6. **श्री पद्मप्रभ भगवान** की मोहन कूट टोंक न. 9 की वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल मिलता है।
7. **श्री सुपार्श्वनाथ भगवान** की प्रभास कूट टोंक नं 20 इस कूट की वंदना करने से 32करोड उपवास का फल मिलता है
8. **श्री चंद्रप्रभ भगवान** की ललित कूट टोंक न. 9 की वंदना करने से अनेक उपवास का फल मिलता है।
9. **श्री पुष्पदंतनाथ भगवान** सुप्रभ कूट टोंक न 6 की वंदना करने से 1 करोड उपवास का फल मिलता है
10. **श्री शीतलनाथ भगवान** की विद्युतवर कूट टोंक न. 1 इस कूट की वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल मिलता है।
11. **श्री श्रेयांशनाथ भगवान** की संकुल कूट टोंक न. 5 की वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल मिलता है।
12. **श्री वासुपुज्य भगवान** की मंदारगिरि कूट टोंक न. 14 की वंदना करने से अनेक उपवास का फल मिलता है।
13. **श्री विमलनाथ भगवान** की सुवीर कूट टोंक न. 21 की वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल मिलता है।
14. **श्री अनंतनाथ भगवान** की स्वयंप्रभ कूट टोंक न 12 की वंदना करने से 1 करोड उपवास का फल मिलता है
15. **श्री धर्मनाथ भगवान** की सुदत्तवर कूट टोंक न 16 की वंदना करने से 1 करोड उपवास का फल मिलता है
16. **श्री शांतिनाथ भगवान** की कुंद्रप्रभ कूट टोंक न. 18 की वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल मिलता है।
17. **श्री कुंथुनाथ भगवान** की ज्ञानधर कूट टोंक न. 1 की वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल मिलता है।
18. **श्री अरनाथ भगवान** की नाटक कूट टोंक न. 3 की वंदना करने से 96 करोड़ उपवास का फल मिलता है।
19. **श्री मल्लिनाथ भगवान** की संबल कूट टोंक न. 4 की वंदना करने से 96 करोड़ उपवास का फल मिलता है।
20. **श्री मुनिसुब्रतनाथ भगवान** की निर्जर कूट टोंक न. 8 इस कूट की वंदना करने से 1 करोड़ उपवास का फल मिलता है।
21. **श्री नमिनाथ भगवान** की मित्रधर कूट टोंक न 2 की वंदना करने से 1 करोड उपवास का फल मिलता है
22. **श्री नेमिनाथ भगवान** की गिरनार कूट टौंक न. 23 की वंदना करने से अनेक उपवास का फल मिलता है।
23. **श्री पार्श्वनाथ भगवान** की स्वर्णभद्र कूट टोंक न 24 की वंदना करने से 16 करोड उपवास का फल मिलता है
24. **श्री महावीर स्वामी** की पावापुर कूट टोंक न. 20 की वंदना करने से अनेक उपवास का फल मिलता है।
25. **श्री गौतम गणधर की टोंक** की वंदना करने से अनेक उपवास का फल मिलता है।

मुनि श्री भावसागर जी महाराज के प्रवचन के हाइलाइट्स

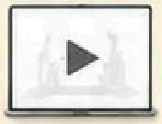

प्रवचन यूट्यूब लिंक
https://youtu.be/AGMIeXtqNv8?si=W2pwJbqvIP2HsbD4

श्री
श्री सम्मेद शिखर जी
सिद्धों की भूमिं
मोक्ष की कमना

तीर्थ वंदना से जीवन धन्य बनता है,
मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।

अधिक जानकारी के लिए देखें
लिंक https://jindharma.com/

।। तीर्थ वंदना : अनंत कल्याण का साधन ।।

प्रभु की सुन गाथा झुकाती है दुनिया माथा

श्री सम्मेद शिखरजी की जाप

जिन मार्ग ही कल्याण मार्ग

1 श्री आदिनाथ भगवान की कैलाश पर्वत कूट टोंक न.10
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नम:

2 श्री अजित नाथ भगवान की सिद्धवर कूट टोंक न. 22
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नम:

3 श्री शभंवनाथ भगवान धवल कुट टोंक न. 14
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री शभंवनाथ जिनेन्द्राय नम:

4 श्री अभिनंदननाथ भगवान कीआनंद कूट टोंक न. 15
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नम:

5 श्री सुमतिनाथ भगवान की अविचल कूट टोंक नं. 17
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नम:

6 श्री पद्मप्रभ भगवान की मोहन कूट टोंक नं. 9
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नम:

7 श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की प्रभास कूट टोंक नं. 20
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम:

8 श्री चंद्रप्रभ भगवान की ललित कूट टोंक नं. 9
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नम:

9 श्री पुष्पदंतनाथ भगवान सुप्रभ कूट टोंक नं. 6
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नम:

10 श्री शीतलनाथ भगवान की विद्युतवर कूट टोंक नं. 11
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नम:

11 श्री श्रेयांशनाथ भगवान की संकुल कूट टोंक नं. 5
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथ जिनेन्द्राय नम:

12 श्री वासुपूज्य भगवान की मंदारगिरि कूट टोंक नं. 14
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नम:

13 श्री विमलनाथ भगवान की सुवीर कूट टोंक नं. 21
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नम:

14 श्री अनंतनाथ भगवान की स्वयंप्रभ कूट टोंक नं. 12
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नम:

15 श्री धर्मनाथ भगवान की सुदत्तवर कूट टोंक नं. 16
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नम:

16 श्री शांतिनाथ भगवान की कुंदप्रभ कूट न 18 टोंक
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नम:

17 श्री कुंथुनाथ भगवान की ज्ञानधर कूट टोंक नं. 1
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नम:

18 श्री अरनाथ भगवान की नाटक कूट टोक न 3
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नम:

19 श्री मल्लिनाथ भगवान की संबल कूट टोंक नं. 4
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नम:

20 श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की निर्जर कूट टोक न 8
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नम:

21 श्री नमिनाथ भगवान की मित्रधर कूट टोंक नं. 2
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नम:

22 श्री नेमिनाथ भगवान की गिरनार कूट टोंक नं. 23
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ नाथ जिनेन्द्राय नम:

23 श्री पार्श्वनाथ भगवान की स्वर्णभद्र कूट टोंक नं. 24
जापमंत्र:-ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम:

24 श्री महावीर स्वामी की पावापुर कूट टोंक नं. 20
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नम:

25 **श्री गणधर टोंक**
जापमंत्र :-ॐ ह्रीं ऋद्धि संपन्न सकल गणधरेभ्यो नमो नम:

तीर्थ स्मरण जीवन का आधार

शुद्ध भाव ही सच्चा उपवास

॥ श्री जिनेन्द्राय नमः ॥

जब श्री सम्मेद शिखर जी में चमत्कार हुआ

अहिंसा
समता
सहयोग
संस्कार
हम सबका
संकल्प

धर्म
संस्कृति
सेवा
समाज
हमारी
पहचान

श्रद्धा की प्यास, प्रभु की कृपा और अद्भुत अनुभव

भक्ति | श्रद्धा | विश्वास | अनुभव | जिनशासन की महिमा

"तीर्थ सिर्फ स्थान नहीं, आत्मा को बदल देने वाला अनुभव है।"

जहाँ श्रद्धा है वहाँ चमत्कार है

1 यात्रा का संकल्प

मई के महीने में श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी जी और एक व्यक्ति श्री सम्मेद शिखर जी की यात्रा को निकले। दोनों ने पहले वन्दना अच्छी तरह की और विचार किया कि एक परिक्रमा भी करनी है। तभी एक और व्यक्ति उनके साथ हो गया। ज्येष्ठ का महीना, मध्याह्न का समय, मार्ग का परिश्रम आदि कारणों से तीनों को प्यास बढ़ने लगी।

2 वर्णी जी की प्रार्थना

वर्णी जी ने मन ही मन कहा – "प्रभो! यदि इस समय मेरी अपमृत्यु हो गई तो कलंक किसे लगेगा? आखिर सभी लोग यहीं तो कहेंगे कि शिखर जी की परिंक्रमा में तीन व्यक्ति पानी के बिना प्राण विहीन हो गए!"
उन्होंने पार्श्व प्रभु से करबद्ध प्रार्थना की – "अब आगे आप ही जाने, हम आपकी शरण में हैं।"

"सच्ची प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती।"

3 चमत्कारिक कुण्ड

हम तीनों लगभग 300 मीटर चले होंगे कि साम्नने पानी से लबालब भरा एक कुण्ड दिखाई पड़ा (वहीं पहले कुण्ड था नहीं, देवों ने उत्पन्न किया था) उसे देखकर हमें अत्यन्त हर्ष हुआ, मानो अन्धे को नेत्र मिल गए हों। हमने वहीं से जल ग्रहण किया और शाम के भोजन के बाद ही मधुवन पहुँचे।

भक्ति जहां होती है वहां व्यवस्था स्वयंमेव हो जाती है।

भक्ति के प्रभाव से चमत्कार हुआ

सम्मेद शिखर जी में देवपथ और खेवपथ मे मक्के /ज्वार के दाने चढ़ाए तो उनकी श्रद्धा और भक्ति से वे रत्न बन गए थे।
यह भक्ति का प्रभाव और तीर्थ की आद्भुत शक्ति का प्रमाण है।

भक्ति साधारण को भी असाधारण बना देती है।

सम्यक् श्रद्धा | भक्ति | ज्ञान | आत्म कल्याण | सर्व मंगल

चलो शिखर की ओर... अंतर की ओर...

॥ तीर्थ हमारा गौरव • हमारा जीवन मार्ग ॥

अहिंसा
संयम
साधना
समर्पण

31 मार्च 2026

भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव

श्री दिगंबर जैन मंदिर गया जी में मुनि श्री धर्मसागर जी , मुनि श्री भाव सागर जी ,आर्यिका श्री सूत्रमति माताजी, आर्यिका श्री शीतलमति माताजी , आर्यिका श्री कर्त्तव्यमति माताजी , आर्यिका श्री श्रुतमति माताजी के सानिध्य में महा मस्तकाभिषेक संपन्न हुआ

“प्रभु की स्मृति हम सबके जीवन में दिशा, साधना और सम्यक जीवन की प्रेरणा है ।

बिहार विधानसभा स्पीकर श्री प्रेम कुमार जी मुनिश्री भावसागर जी महाराज से चर्चा करते हुए 31 मार्च 2026 , गयाजी

|| श्री जिनेन्द्राय नमः ||

सम्यक दर्शन । सम्यक ज्ञान । सम्यक आचरण

अहिंसा
संमता
संयम
सेवा
संस्कार
हमारी
पहचान

पंच तीर्थ महायात्रा 2026

तीर्थ
सेतु है
आत्मबल का,
यात्रा है
अंतरात्मा
के उजास
की ओर

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित एवं परम पूज्य आचार्य श्री समय सागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती शिष्य

मुनि श्री धर्मसागर जी महाराज ,मुनि श्री भावसागर जी महाराज , एवं आर्यिका श्री अनंतमति माताजी ससंघ आर्यिका श्री सूत्रमति माताजी ससंघ सहित 13 आर्यिका माताजी के सानिध्य में पंचतीर्थ पदयात्रा 1 मार्च 2026 को प्रातः काल की वेला में श्री सम्मेद शिखरजी से प्रारंभ हुई

|| तीर्थ यात्रा • आत्म कल्याण • समाज कल्याण • विश्व मंगल ||

01 मार्च 2026 — प्रातः काल की बेला में पंच तीर्थ की यात्रा प्रारंभ हुई जिसके अंतर्गत श्री दिगंबर जैन पालगंज में चतुर्थ कालीन प्रतिमा के दर्शन किए।

08 मार्च 2026 — प्रातः काल की बेला में परम पूज्य आचार्य श्री समय सागर जी महाराज का मुनि दीक्षा स्मृति महोत्सव पूरे विश्व सहित देवघर में मनाया गया विशेष मांगलिक क्रियाएं संपन्न हुई

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरण चिह्न विश्व की अनोखी प्रथम वेदी पर विराजमान किये जाएंगे,

मुनि श्री धर्म सागर जी महाराज,
मुनि श्री भाव सागर जी महाराज , आर्यिका श्री संवेग मति माताजी,
आर्यिका श्री शोधमति माताजी,आर्यिका श्री श्रुतमति माताजी, की आहारचर्या का सौभाग्य एवं शास्त्रदान का सौभाग्य देशके प्रसिद्ध उद्योगपति पाटनी परिवार आर. के. मार्बल,बंडर सीमेंट राजस्थान की श्रीमति शांता पाटनी को प्राप्त हुआ,

11 मार्च 2026 — प्रातः काल की बेला में 50 वर्ष में प्रथम बार मंदारगिरि तीर्थ (बिहार)क्षेत्र की वंदना की एवं आहारचर्या संपन्न हुई ,

13 मार्च 2026 — प्रातः काल की बेला में प्रथम बार श्री चंपापुर सिद्ध क्षेत्र (बिहार)की वंदना की यहां अनेक प्रतिमाओं के दर्शन किए एवं **2500 वर्ष चरण चिह्न के दर्शन किये**,शांतिधारा संपन्न हुई एवं यहां आहारचर्या संपन्न हुई , ,

21 मार्च 2026 — श्री गौतम स्वामी की केवल ज्ञान, निर्वाण भूमि श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र गुणावा जिला नवादा (बिहार) में प्रातः काल की बेला में मंगल प्रवेश हुआ। प्रथम बार कुंडलपुर नालंदा की वंदना की। **अगले दिन, 22 मार्च को मुनि संघ ने पावापुरी की प्रथम बार वंदना की**

23 मार्च 2026 — श्री दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कुंडलपुर जिला नालंदा (बिहार) में शाम की बेला में मंगल प्रवेश हुआ। 50 वर्ष में प्रथम बार मुनिराजों ने वंदना की।

24 मार्च 2026 — श्री संभवनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया गया।

25 मार्च 2026 — श्री दिगंबर जैन सिद्ध क्षेत्र राजगीर जिला नालंदा (बिहार)में प्रातः काल की बेला में मंगल प्रवेश हुआ, 50 वर्ष में प्रथम बार मुनिराजो ने पर्वत पर स्थित मंदिरों की वंदना की, यही आहारचर्या संपन्न हुई, **आचार्य पद आरोहण स्मृति महोत्सव** राजगीर में मनाया गया ,मुनि संघ की पंच तीर्थ की यात्रा सानंद पूर्ण हुई।

26 मार्च 2026 — प्रातः काल की बेला में पांचवें, चौथे, तीसरे, पर्वत की वंदना पूर्ण हुई, **चौथे पर्वत पर मंदिर में सर्प ने भी मुनिराजो के दर्शन किए**, परम पूज्य आचार्य श्री समय सागर जी महाराज का आचार्य पद आरोहण स्मृति महोत्सव पूरे विश्व सहित राजगीर में मनाया गया , **मंदिर में सर्प ने भी दर्शन किए**

29 मार्च 2026 — श्री दिगंबर जैन मंदिर गया जी में मंगल प्रवेश हुआ एवं अहिंसा स्तंभ की मांगलिक क्रियाएं की गई।

30 मार्च 2026 — प्रातः काल की बेला में भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव, का प्रथम चरण संमन्न हुआ।

31 मार्च 2026 — श्री महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव, का द्वितीय चरण संमन्न हुआ। यह धूमधाम से मनाया गया।

“तीर्थ यात्रा केवल स्थानों की यात्रा नहीं, यह आत्मा के उत्कर्ष की यात्रा है।”

वंदे तीर्थ
वंदे संत
वंदे जिनधर्म

धर्म | सेवा | संस्कृति | समाज | सदैव समर्पित

पवित्र यात्रा
उज्ज्वल संस्कार
शांतिमय संसार

अहिंसा
संयम
साधना
समर्पण

25 मार्च 2026

50 वर्ष में प्रथम बार राजगीर सिद्ध क्षेत्र की वंदना की

मुनि श्री 108 धर्म सागर जी एवं मुनि श्री 108भाव सागर जी में प्रातः काल की बेला में मंगल प्रवेश हुआ, यही आहारचर्या संपन्न हुई,

" प्रभु की स्मृति हम सबके जीवन में दिशा, साधना और सम्यक जीवन की प्रेरणा है।

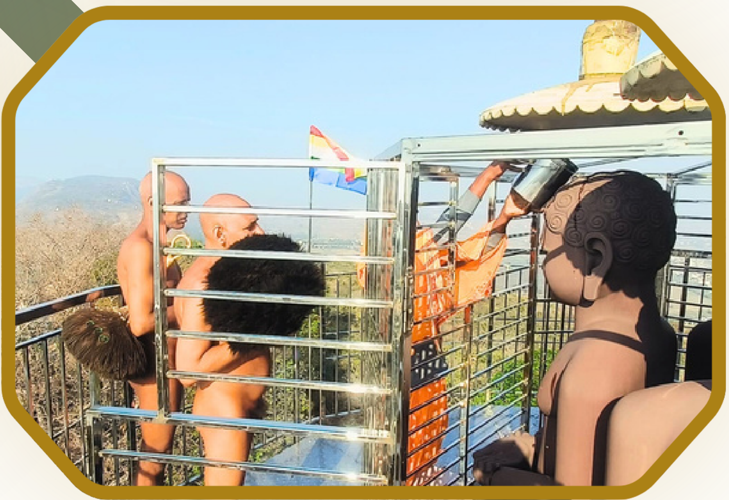

" तीर्थ की वंदना से जीवन का कल्याण होता है, और साधु-संघ का सानिध्य अमूल्य है। "

तीर्थ यात्रा के पथ पर...

तीर्थ वंदना | आत्मकल्याण | अहिंसा | सम्यक जीवन

चम्पापुर दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र

चम्पापुर अत्यन्त प्राचीन एवं पौराणिक तीर्थक्षेत्र है। तीर्थंकर **श्री 1008 भगवान वासुपूज्य** के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और निर्वाण-पाँच कल्याणक भूमि है।

वर्तमान में चम्पापुर सिद्धक्षेत्र पर **19 बड़े जिनालयों** के साथ कुल 49 वेदियाँ स्थित हैं।

सहस्रों वर्ष प्राचीन दो कीर्तिस्तम्भों, चौबीस टोंकों के बीच अवस्थित पूर्वांचल में अद्वितीय 71 फीट ऊँचा विशाल मानस्तम्भ से समलंकृत **चतुर्थकालीन** व मनोरम जिनबिम्बों एवं अति प्राचीन चरणपादुका से सुशोभित इस निर्वाण क्षेत्र का वातावरण बहुत ही सुखमय और प्रशान्त है। विश्व की सबसे ऊँची भगवान वासुपूज्य की 31 फुट खड्गासन जिन प्रतिमा भी यहाँ विराजमान है।

🚉 **यातायात की सुविधाएँ**

रेलवे स्टेशन: भागलपुर – 4 कि.मी. नाथनगर–1 कि.मी.

बस स्टैंड: भागलपुर, बागबाड़ी, टी.एन.बी. कॉलेज – 0 माइल

निकटतम प्रमुख शहर:

भागलपुर – 4 कि.मी. पूर्णिया – 110 कि.मी. पटना – 230 कि.मी.

📞 **संपर्क सूत्र मोबाइल:** 99312 28733 / 90065 61904

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मंदारगिरि, बिहार

मंदिरों की संख्या: 08 – पर्वत पर 5 एवं पर्वत की तलहटी में 3 मंदिर।

पर्वत पर लगभग 1.5 कि.मी. का खड़ा एवं कठिन मार्ग है। डोली की सुविधा उपलब्ध है

भगवान वासुपूज्य जी के तप, ज्ञान एवं निर्वाण कल्याणक से यह पवित्र क्षेत्र जुड़ा हुआ है।

विशेष आयोजन: प्रत्येक वर्ष भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी के दिन मोक्ष कल्याणक के अवसर पर रथयात्रा का आयोजन किया जाता है।

-ठहरने एवं भोजनशाला की सुविधा उपलब्ध है

यातायात की सुविधाएँ

रेलवे स्टेशन: मंदार हिल (MDLE) – 0 कि.मी. भागलपुर (BGP)– 50 कि.मी. जसीडीह (JSME)– 75 कि.मी.

बस स्टैंड: बौंसी – ½ कि.मी.

निकटतम हवाई अड्डे: पटना, राँची एवं कोलकाता

पहुंच मार्ग : भागलपुर से बौंसी के लिए कई बस और ट्रैन रहती है

निकटतम प्रमुख शहर:भागलपुर–50 कि.मी. जसीडीह–75 कि.मी. देवघर–70 कि.मी.

संपर्क सूत्र मोबाइल: 93347 70317 9386461769

श्री गुणावा दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र

गुणावा का यह मंदिर गौतम स्वामी की मोक्षस्थली है।

यहाँ श्री गौतम गणधर स्वामी का मंदिर दर्शनीय हैं।

यातायात की सुविधाएँ

रेलवे स्टेशन: नवादा (NWD):3.5 कि.मी. गया जंक्शन : 70 कि.मी.

बस स्टैंड: नवादा – 5 ½ कि.मी. **पहुंच मार्ग** : **गया से नवादा के लिए कई ट्रैन चलती है**

निकटतम प्रमुख शहर: नवादा – 1 कि.मी. गया – 70 कि.मी. पटना – 115 कि.मी. पावापुरी-23 किमी राजगीर -36 किमी

📞 संपर्क सूत्र मो: 9386461769 / 9334770317

मुनि संघ पावापुर की वंदना करते हुए

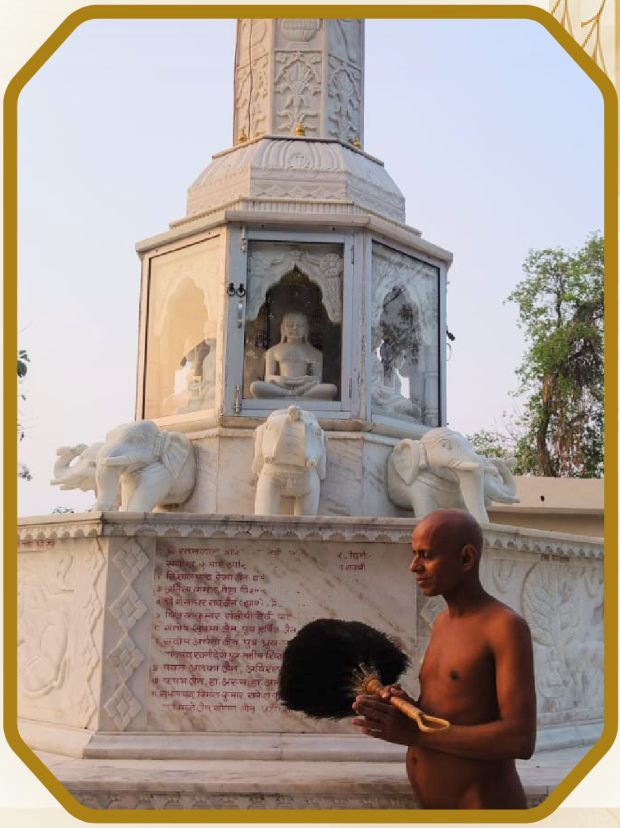

पावापुर में भगवान के चरण चिह्न
के दर्शन करते हुए मुनिश्री

तीर्थ
यात्रा
के पथ पर...

पावापुरी जी सिद्धक्षेत्र

पावापुरी **भगवान महावीर** की निर्वाणभूमि है।

वर्तमान में विशाल जलाशय के मध्य निर्मित **जल मंदिर** को भगवान महावीर के निर्वाण स्थल के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। संगमरमर का जल मंदिर पावापुरी की सबसे प्रमुख पहचान है।

इसके अतिरिक्त यहाँ सुंदर समवसरण मंदिर भी स्थित है, जहाँ भगवान महावीर की दिव्यध्वनि एवं उपदेशों की स्मृति से संबंधित धार्मिक परंपरा जुड़ी हुई है।

आवास एवं भोजन की सुविधा है

यातायात की सुविधाएँ

रेलवे स्टेशन :पावापुरी हाल्ट - 11 कि.मी.

पटना 95 कि.मी. गया 85 कि.मी.

बस स्टेण्ड : बिहारशरीफ - 12 कि.मी. पोखरपुरी - 2 कि.मी.

निकटतम हवाई अड्डे: पटना, और गया

पहुंच मार्ग : पटना से राजगीर या बिहार शरीफ़ से पोखरपुरी के लिए बस चलती है .

गया या शिखरजी से नवादा होते हुए पहुँच सकते है

संपर्क सूत्र मोबाइल: 99312 28733 ,90065 61904 , 09534143054

राजगिर दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र

मंदिरों की संख्या: **12** – पर्वत पर 10 तथा पर्वत की तलहटी में 2 मंदिर।

तीर्थक्षेत्र में पर्वत कुल 4,189 सीढ़ियाँ हैं।

राजगीर भगवान **श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ स्वामी** के गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञान कल्याणक से सुशोभित है ।

इसी पावन भूमि पर भगवान महावीर स्वामी ने अपनी **प्रथम देशना** (धार्मिक उपदेश) प्रदान की थी।

मुख्य मंदिर के सामने 12.25 फुट ऊँची भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की पद्मासन प्रतिमा विराजमान है।

राजगीर का प्रमुख प्राकृतिक आकर्षण यहाँ के **प्राकृतिक गर्म जलस्रोत (गरम कुंड)** हैं।

🚉 **यातायात की सुविधाएँ**

रेलवे स्टेशन:

राजगीर (RJD)– 1 कि.मी.

बस स्टैंड: राजगीर

पहुंच मार्ग : पटना ,गया से राजगीर के लिए बस उपलब्ध रहती है

बिहारशरीफ़ होते हुए पहुँच सकते है एवं **दिल्ली** से सीधी ट्रैन उपलब्ध है

निकटतम प्रमुख शहर:

बिहार शरीफ – 25 कि.मी. गया – 65 कि.मी. पटना – 110 कि.मी.

📞 **संपर्क सूत्र मोबाइल:** 9386461769 / 9334770317

सम्यक दर्शन
सम्यक ज्ञान
सम्यक चरित्र

**वीडियो देखने के लिए फोटो पर क्लिक करें
या क्यू आर कोड स्कैन करें**

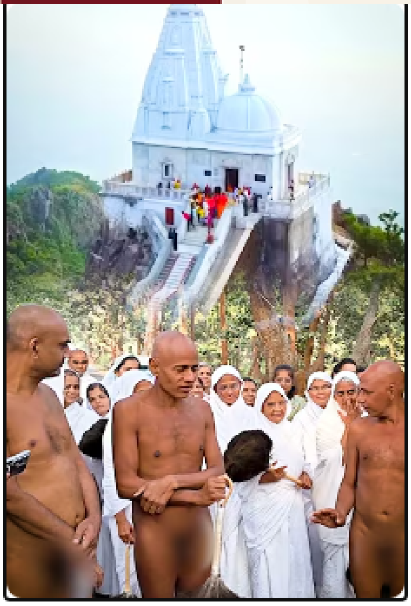

मंगल प्रवेश मुनि श्री धर्म सागर जी मुनि ने भाव साग...

पाटनी परिवार आर के मार्बल,बंडर सीमेंट परिवार ने कई सोभाग्य प्राप्त किये 8/03/26 देवघर

50वर्ष में प्रथम बार मुनिराजों ने मंदारागिरी की वंदना की मुनि श्री धर्मसागर जी मुनि श्री भावसागर जी

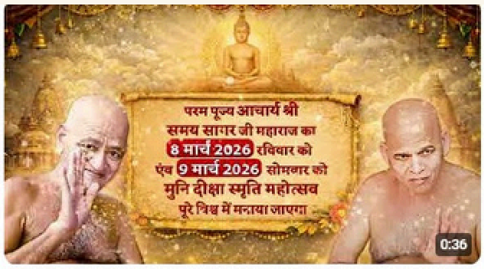

मुनि श्री धर्म सागर जी महाराज मुनि श्री भाव सागर जी महाराज श्री सम्मेद शिखरजी

मुनि श्री धर्म सागर जी महाराज मुनि श्री भाव सागर जी महाराज श्री सम्मेद शिखर जी 19/02/26

पंचतीर्थ यात्रा आनंद पूर्वक चल रही हैं मुनि श्री धर्मसागर जी मुनि श्री भावसागर जी श्री सम्मेद शिखरजी

मुनि श्री धर्म सागर जी महाराज मुनि श्री भाव सागर जी महाराज तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखरजी

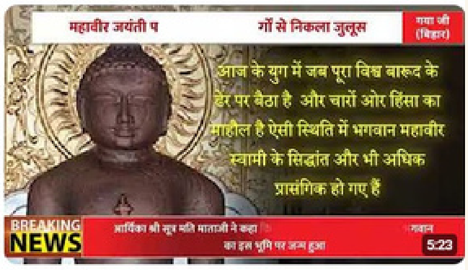

मुनि श्री धर्म सागर जी महाराज मुनि श्री भाव सागर जी महाराज

36 views • 5 months ago

मंगल प्रवेश आ श्री अनंतमति माताजी,मुनिश्रीधर्म सागरजी,मुनिश्रीभावसागरजी के दर्शनार्थ गया जी 06/04/26

इटली से आए हुए लोगों ने मुनि श्री के दर्शन किए वाराणसी 14/08/26

54 views • 1 month ago

19 September 2026

6 views • 7 hours ago

तीर्थ यात्रा के पथ पर...

वीडियो देखने के लिए फोटो पर क्लिक करें या क्यू आर कोड स्कैन करें

400वर्ष प्राचीन प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक मुनि श्री धर्मसागर जी,मुनि श्री भावसागर जी गया जी 30/03/26

अहिंसा स्तंभ की मांगलिक क्रियाएं मुनि श्री धर्म सागर जी ,मुनि श्री भाव सागर जी गया जी 29/03/26

आचार्य पद आरोहण महोत्सव हुआ संपन्न राजगीर सिद्ध क्षेत्र की वंदनाकी मुनि श्री धर्म सागर जी 26/03/26

50 वर्ष में प्रथम बार पावापुरी की वंदना की पावापुरी 22/03/2026

जेनेत्तरो ने नशा एवं मांसाहार का त्याग किया मुनि श्री धर्म सागर जी,मनि श्री भाव सागर जी 12/03/26

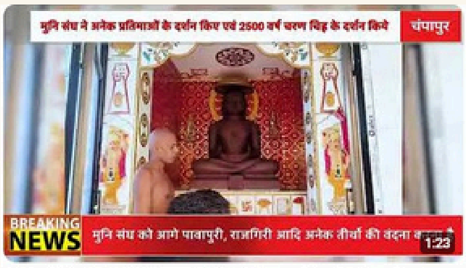

चंपापुर सिद्ध क्षेत्र की वंदना मुनि श्री धर्म सागर जी,मुनि श्री भाव सागर जी चंपापर 13/03/26

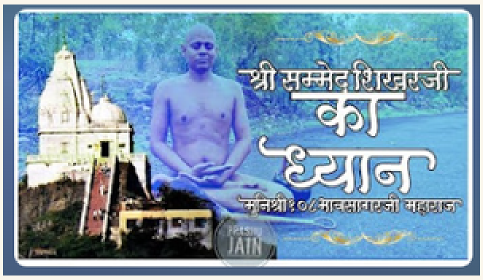

पदम प्रभु भगवान का मोक्षकल्याणक

चातुर्मास कलश स्थापना 28 वाँ मुनि श्री 108 धर्म सागर जी मुनि श्री 108 भाव सागर जी वाराणसी...

वसवस

तीर्थ यात्रा के पथ पर...

वसवस

अहिंसा
संयम
साधना
समर्पण
से ही
तीर्थों की
रक्षा संभव है

श्री सम्मेद शिखर जी की रक्षा के लिए यह करें

तीर्थ
हमारा गौरव
हमारी
जिम्मेदारी
आओ मिलकर
संरक्षण का
संकल्प लें

यह वही पावन भूमि है **श्री सम्मेद शिखर जी,**
जो दिगंबर और श्वेतांबर और समस्त श्रमण संस्कृति के अनुयायियों के लिए
पूजनीय है, अनंतानंत सिद्ध आत्माओं की मोक्षप्राप्ति का शाश्वत स्थान है।
लेकिन... उसी क्षेत्र की ऐसी स्थिति देख कर मन दु:खी हो उठता है,
परंतु अब समय है संरक्षण का।

1

चरणों में द्रव्य न चढ़ाएँ :
बंदरों द्वारा फैल रही गंदगी और
हमलों से मुनिराज, आर्यिका माताजी
और श्रद्धालु सुरक्षित रहें'
इसका ध्यान रखें।

2

**द्रव्य के लिए
पात्र की व्यवस्था करें।**

3

यह तीर्थ पिकनिक स्पॉट
नहीं है अत: फोटो, वीडियो,
गंदगी, फिल्मी गीत इन सबका
प्रयोग नहीं करें।

4

माँ, बहनें, बालिकाएँ जब
अकेले वंदना करती हैं तो वह
समूह में वंदना करें।

5

वंदना प्रारंभ करने से पहले, संकल्प लें कि पर्वत पर
जबतक वंदना पूर्ण नहीं हो जाएगी तक कुछ भी खाएंगे नहीं।
बीमारी की छूट लेकर संकल्प लें।

पूरे विश्व के समस्त दिगंबर और श्वेतांबर बंधुओं के लिए जो पूजनीय स्थल है।

ऐसे तीर्थ की रक्षा, हमारी जिम्मेदारी है।

आइए ! आस्था के साथ अनुशासन भी अपनाएँ
और श्री सम्मेद शिखर जी की पवित्रता बनाए रखें।

तीर्थ की रक्षा
धर्म की रक्षा

पवित्र तीर्थ
हमारी धरोहर
हम सबकी जिम्मेदारी

महातीर्थ पदयात्रा :

प्रमुख सहयोगी

अहिंसा
समता
सहयोग
संरक्षण
हम सबका
संकल्प

एक
संकल्प
तीर्थ संरक्षण
एक
प्रयास
धर्म जागरण
एक
साथ
समृद्ध समाज

1. सकल दिगंबर जैन समाज सिवनी मध्य प्रदेश
2. पाटनी परिवार , आर के मार्बल वंडर सीमेंट परिवार , राजस्थान
3. गुणायतन परिवार , श्री सम्मेद शिखरजी
4. सकल दिगंबर जैन समाज झुमरी तिलैया , कोडरमा (झारखण्ड)
5. सकल दिगंबर जैन समाज हजारीबाग (झारखण्ड)
6. विक्की जैन , जे एम बी , इंदौर (मध्य प्रदेश)

यात्रा मार्ग के प्रमुख नगर

सिवनी → बालाघाट → डोंगरगढ़ → राजनांदगांव → दुर्ग → भिलाई → रायपुर → कोरबा → जशपुर → रॉंची → श्री सम्मेद शिखरजी

पद-पद पर सेवा, नगर-नगर से सहयोग, लक्ष्य एक – श्री सम्मेद शिखरजी

महातीर्थ यात्रा डायरेक्टरी टीम

संयोजना	: डॉ विवेकानंद जैन , bhu	94505 38093
ग्राफिक्स एंड ए आई डिजाइन	: महावीर जैन भोपाल	6260466070
ग्राफिक्स एंड ए आई डिजाइन	: नितिन जैन अरिहंत कम्प्यूटर्स टीकमगढ़	82260 60609
ग्राफिक्स	: प्रशीश जैन बांसवाड़ा	94141 04059

विशेष सहयोग (आभार सहित)

- रानू भैया नोहटा
- फोटोग्राफी प्राशु जैन
- सहयोग संभव जैन भोपाल
- सौम्य जैन घाटोल
- सुमित जैन शिवनी

श्री सम्मेद शिखर जी प्रत्येक टोंक की चित्र व अर्घसहित भाव वंदना

https://jindharma.com/pdf/

अधिक जानकारी के लिए QR कोड स्कैन करें

|| धर्म पथ पर साथ, तीर्थ रक्षा का संकल्प ||